

SHRI KADAMPUTHARAMADOM GOPALAN THANTHRI JAYAN

Shri Kadamputharamadom Gopalan Thanthri Jayan is an exponent of Carnatic Music, especially in composing and rendering devotional songs. His Lord Ayyappa devotional songs have been all time hits. As part of a long career, he has sung classical, composed for films and rendered several devotional songs.

2. Born on December 6, 1934, Shri Jayan was struck by polio at the age of two. But he has let his spirit soar through the wonderful world of music. Initiated into the world of music quite early in our lives, he and his brother started to learn Carnatic music from Raman Bhagavathar. Later, he trained under Mavelikkara Radhakrishna Iyer. After completing his Matriculation in 1952, he continued to learn music at the famed Swathi Thirunal Music Academy at Thiruvananthapuram. Impressed by his music, the late regent of Travancore, Shri Chithira Thirunal gave him a royal recognition as certificate and sent him for higher studies in music to the Alathur brothers in Thiruchirapalli. The major turning point in his music education happened when he started training under Padma Vibvhushan Balamurallkrishna in 1956.

3. Shri Jayan's songs have been recorded on several leading music companies like HMV, Columbia, Sariga, Magnasound etc. His Ayyappa devotional songs have been evergreen. Even today one of his song is played daily at Sabarimala in the mornings when the temple opens for Darshan. For the Last many years, he has had the good fortune to render the 'Mangalam at Chembai Music Festival at Guruvayoor.

4. Shri Jayan has been the music Director for about thirty Malayalam and Tamil film songs. He has toured several countries like Singapore, Malaysia, Sri Lanka, Gulf Countries, USA, Canada, UK etc. As a music Director, he has directed legendaries like Padmashri K. J. Yesudas, P Jayachandran, Chithra, P Susheela, Vani Jayaram etc. He experimented successfully the use of Jazz in Carnatic classical music and tried a different approach by using instruments like Chenda (Mattannur Sankarankutty) as accompaniment in addition to the usual instruments in a traditional rendering of classical recital. He has co authored the musical biography of his Great Grand Guru Padma Vibhushan Chembai, titled Chembai: Sangeethavum, jointly with his brother Late Sri K. G. Vijayan.

5. Shri Jayan won several accolades including the prestigious Kalaratnam by Travancore Devaswom Board (1972), Sangeetha Natak Akademi (1991), Chembai Puraskaram (2010), Sageetha Natak Akademi Tagore Centenary Award (2011) and Mysore Maharajas Award (2017).

पद्म श्री

श्री कडमपूत्रमडम गोपालन तंत्री जयन



श्री कडमपूत्रमडम गोपालन तंत्री जयन कर्नाटक संगीत के साधक हैं और विशेष रूप से भक्ति गीतों की संगीत रचना और गायन में निपुण हैं। आपके भगवान अयप्पा के भक्ति गीत सदाबहार रहे हैं। आपके लम्बे करियर के दौरान आपने शास्त्रीय गीत गाये, उन्हें फिल्मों के लिए संगीतबद्ध किया और अनेक भक्ति गीत प्रतिपादित किए।

2. आपका जन्म 6 दिसम्बर, 1934 में हुआ। आप दो वर्ष की अवस्था में पोलियो से ग्रसित हो गए थे। किंतु आपने संगीत की अदभुत दुनिया में अपने मनोभावों को नई ऊंचाईयां प्रदान की। आपने बहुत कम आयु में ही हमारे जीवन में संगीत का रस भरना आरंभ कर दिया। आप और आपके भाई ने आरंभ में श्री रमन भगवतार से कर्नाटक संगीत की शिक्षा ग्रहण की। तत्पश्चात आपने मवेलिक्करा राधाकृष्णा अय्यर के सानिध्य में प्रशिक्षण लिया। वर्ष 1952 में अपनी मैट्रिक की शिक्षा पूरी करने के पश्चात्, आपने तिरूवनंतपुरम स्थित प्रतिष्ठित स्वाति तिरूनल संगीत अकादमी में संगीत सीखना शुरू किया। आपके संगीत से प्रभावित होकर त्रावणकोर के तत्कालीन शासक श्री चितिरा तिरूनल ने एक प्रमाणपत्र के रूप में आपको राजकीय सम्मान प्रदान किया और संगीत में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए आपको तिरूचिरापल्ली में अलतुर बंधुओं के पास भेजा। आपकी संगीत शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब आपने वर्ष 1956 में पदम विभूषण बालमुरलीकृष्णन के सानिध्य में प्रशिक्षण प्राप्त करना आरंभ किया।

3. आपके गीतों को अनेक अग्रणी संगीत कंपनियों जैसे एचएमवी, कोलम्बिया, सरिगा, मग्नसाउंड आदि में रिकार्ड किया गया है। आपके अय्यप्पा भक्ति गीत सदाबहार रहे हैं। आज भी आपका एक गीत सबरीमला में दर्शन हेतु मंदिर द्वार खोले जाते समय प्रतिदिन बजाया जाता है। पिछले कई वर्षों से आपको 'गुरुवयूर में चेम्बई संगीत महोत्सव में मंगलम' गाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

4. आप लगभग तीस मलायलम और तमिल गीतों के संगीत निर्देशक रहे हैं। आपने अनेक देशों जैसे सिंगापुर, मलेशिया, श्री लंका, खाड़ी देशों, यूएसए, कनाडा, यू.के आदि का भ्रमण किया है। संगीत निर्देशक के रूप में, आपने पद्मश्री के.जे. यसुदास, पी. जयचन्द्रन, चित्रा, पी. सुशीला, वाणी जयराम आदि जैसे दिग्गजों का निर्देशन किया है। आपने कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में ज़ैज़ (जेएजेडजेड) के उपयोग का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है और शास्त्रीय गीतों के पारम्परिक गायन में संगत के रूप में पारम्परिक वाद्य यंत्रों के अतिरिक्त चेन्डा (मत्तन्नयूर सकरनकुट्टी) जैसे वाद्य यत्रों का प्रयोग कर उसे एक अलग दिशा देने का प्रयास किया है। आपने अपने भाई स्व. श्री के.जी. विजयन के साथ मिलकर अपने सबसे बड़े गुरू पदम विभूषण चेम्बई की संगीतमय आत्मकथा- "चेम्बई: संगीतवम" लिखी।

5. आपको अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया जिसमें त्रोवणकोर देवास्वोम बोर्ड द्वारा कलारत्नम (1972), संगीत नाटक अकादमी (1991); चेम्बई पुरस्कारम (2010), संगीत नाटक अकादमी टैगोर शताब्दी पुरस्कार (2011) और मैसूर महाराज्य पुरस्कार (2017) शामिल हैं।